मणिजा नाम के आर्यों की सभ्यता का युग

खुशबू कुमारी

सृष्टि के प्रारम्भ का प्रश्न मनुष्य के मस्तिष्क में प्राचीन काल से लेकर आज तक बना हुआ हैं। इस प्रश्न की खोज में सभी शास्त्रों का जन्म होता चला गया। परन्तु आज भी यह एक गुत्थी बना हुआ है, इसका निवारण करने के लिए वेद विद्या विशारद पं. मधुसूदन ओझा ने वेद शास्त्र के माध्यम से इसका निवारण किया है, जो इस प्रकार है-

सभ्य रूप सृष्टिकाल के प्रथम होने वाले सभ्यता युग की द्वितीय युगता। (वायुपुराण में लेख है कि त्रेतायुग के आरंभ में स्वायंभूव मन्वंतर में देव याम नाम से ख्यात हुए थे, जिन्होंने सर्वप्रथम यज्ञ की उत्पत्ति की थी। यह ब्रह्मा के पुत्र अजीत नाम के थे और जित-जिताजित नाम के पुत्र स्वायम्भुव के थे- ये सब शुक्र नाम से प्रसिद्ध हुए थे।

ये देवों का एक गण संस्थान था- इनमें तीन गण थे- एक तृप्तिमन्त गण, दूसरा तुषिमन्त गण- यह अति वीर्यशाली बलवान् गण था। तीसरा गण व्रजकुल नाम का था। ये स्वायंभूव मन्वंतर में थे। अयन-वर्ष-युग आदिकाल के क्रम में इन को बहुत समय व्यतीत हो गया- आगे ये सब नष्ट हो गए आदि।) इस पुराणकथन का यहां विश्लेषण किया जा रहा है -

वन्ययुग के अनन्तर द्वितीय युग के प्रारंभ में सभ्यता का जो प्रथम युग माना जाता है उसमें वेद प्रतिपादित यज्ञविज्ञान के सुशिक्षित याम नाम के देवगण पहले के उस आदिकाल में प्रसिद्ध हुए थे- वह स्वायंभूव नाम का मन्वंतर माना गया है- जिस काल में ये याम-देवगण इस पृथ्वी पर अवतरित हुए थे (मानव रूप में)।।1।।

याम-तृप्तिमन्त, त्विषिमन्त और व्रजकुल इन तीनों विधाओं में विभक्त थे, इन में तृप्तिमन्त गण में तीन प्रसिद्ध पुरुष ऐसे हुए जो बारह कलाओं में विकसित होकर तीन के बारह भाव बन गये अथवा गण बन गये ।।2।।

तृप्तिमन्तों में उन तीन के नाम अजितगण, जित-अजितगण और अजितगण। उनमें जितगण विस्तृत होकर द्वादश कलावान् हुए, त्विषिमन्तों का गण सबका शासन करता था, वैश्य वर्ग तथा कार्मिक वर्ग व्रजकुल नाम से प्रसिद्ध थे।।3।।

इस प्रकार यह तीनों विधाओं में विभक्त याम के पुरुषगण अपने कर्म में निष्ठावान् होते हुए, पहले बहुत सम्मानित हुए किंतु बहुत काल के अंतराल में वे सब कालग्रस्त होकर निःशेष हो गए। उनके अनन्तर मणिजा नाम की जाति के महाविद्वान् पुरुष अवतरित हुए, इनका क्रमशः उदय हुआ था।।4।।

मणिजा जाति के मानवों की स्थितिभूमि उत्तर दिशा में हिमालय से उत्तर समुद्र पर्यंत बड़े प्रशस्त रूप में थी। सर्वप्रथम मणिजा का उद्भव चीन प्रदेश में हुआ- वहां से वे इधर-उधर सर्वत्र प्रसिद्ध हो गये- हिमालय से उत्तर सागर पर्यन्त वास करते हुए ।।5।।

चीन से चलकर इन्होंने उत्तर-पश्चिम दिशा को जीतकर स्वर्ग की नाक शाखा पर्यंत प्रतिष्ठा के साथ निवास बना लिया आकाश मंडल में जो हंस नाम तारा है उससे पश्चिमोत्तर के अंतिम अंश के नमतल में किसी काल से इस उत्तर ध्रुव की स्थिति थी।।6।।

हंस तारा से चतुर्थ अंश में जब ध्रुव था उस काल में मणिजा जाति का उदय हुआ था। उस समय मनुष्यों के निवास की दो प्रकार की स्थिति थी, एक जनसमुदाय वन में निवास करने वालों का था।।7।।

अन्य जन विभाग पुरवासियों का नवीन था, वे नवीन ही मणिजा नाम से प्रशस्त होकर प्रसिद्ध हुए थे। पूर्वोक्त वनवासीगण शिक्षाविहीन, संस्कार विहीन (प्राकृतिक),असभ्य सब भिन्न-भिन्न समूह बनाकर रहते थे ।।8।।

वे वन्य जन प्रायः लूट-खसोट करने वाले आचार विहिन पशु समान वृत्ति के बर्बर नाम के अनार्य ख्यात हुए थे। नवीन जो मणिजा जाति के थे, वे सब सभ्य थे, वे उस प्राचीन काल में सर्वगुण-विशिष्ट आर्य नाम से प्रसिद्ध हुए थे।।9।।

दशम श्लोक का पूर्वार्द्ध त्रुटित है- उत्तरार्द्ध में बताया गया कि वे आर्यजन मर्यादित रूप में अपनी आजीविका चलाते थे, इन बुद्धिमान् जनों ने आजीविका की मर्यादित कल्पना स्वतः की थी। आजीविका के अतिरिक्त अन्य जीवन व्यवहार भी इनके मर्यादित थे।।10।।

विद्यानिधि ज्योतिष